समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

प्रचार-प्रसार
विजय कुमार सिंह

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- राकेश मिश्र की कविताओं पर विशेष सामग्री : *डॉ. रमा* 3
- कवि राकेश मिश्र की कविताएँ... : *डॉ. दर्शन पाण्डेय* 8
- राकेश मिश्र की चुनी हुई कविताएँ 11
- गांधीवादी दर्शन और बाणभट्ट... : *प्रो. सत्यकेतु सांकृत* 15
- मीडिया और साहित्य : *सूर्यनाथ सिंह* 19
- कहानी आलोचना के संदर्भ में पाठकीय... : *पंकज शर्मा* 22
- 'विश्व संगीत के गॉड फादर', ... : *डॉ. प्रकाश चन्द्र गिरि* 25
- कहानी विधा के सापेक्ष आलोचना... : *आनंद कुमार सिंह* 28
- राही मासूम रजा और शानी : ... : *डॉ. सुनील कुमार यादव* 30
- कामायनी में सत्यं शिवं और सुंदरं... : *डॉ. शोभा कौर* 33
- बींसवी शताब्दी की कुछ महत्त्वपूर्ण ... : *डॉ. मिथिलेश कुमारी* 36
- मलयज के लिरिकल प्रोज़ का संसार... : *डॉ. राकेश कुमार* 38
- सूचना समाज के दौर में संवदिया : *अनुपम कुमार* 41
- संभावनाओं के आईने में दिल्ली ... : *डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह* 43
- एफएम चैनलों... : *निखिल आनंद गिरि'-डॉ. सर्वेश दत्त त्रिपाठी* 46
- भोजपुरी गीतों में प्रतिरोधी स्वर : *डॉ. सोनी पाण्डेय* 49
- हिंदी उपन्यासों में चित्रित उत्तराखंड... : *जेनब खान* 51
- प्रवासी साहित्य और नीना पॉल... : *डॉ. आसिफ उमर* 54
- 'भाषाई पत्रकारिता और डिजिटल... : *चंदन कुमार भारती* 57
- स्वर से ईश्वर की खोज : *डॉ. चंद्रकांत सिंह* 60
- साहित्यिक विधाओं के अंतर्मिलन... : *आनंद कुमार सिंह* 63
- इंटरनेट के दौर में हिंदी : *डॉ. गंगा सहाय मीणा-डॉ. अनुपमा पांडेय* 66
- आप्रवासन परंपरा, प्रक्रिया और अवधारणा : *नीलमणी भारती* 70
- 'कथेतर गद्य की दृष्टि से रेणु का रिपोर्ताज कर्म' : *निशा गुप्ता* 73
- हिंदी कविता में विश्व शांति का स्वरूप : *डॉ. रामचरण पांडेय* 76
- समकालीन उपन्यासों में ... : *अमृता श्री* 79
- लोकराग-आल्हा : *डॉ. रश्मि शर्मा* 83

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

स्वर से ईश्वर की खोज

डॉ. चंद्रकांत सिंह

गुरुनानक देव जी एक महान संत हैं जिन्होंने अपने कर्म, शिक्षा एवं आचरण से लोकमानस को प्रभावित किया। उनके विचारों को उपनिषद् की आप्तचेतना का निरंजन स्वरूप कहा जा सकता है, वे ओंकार के मसीहा हैं जिन्होंने नाद की महिमा एवं नाद-श्रवण के महात्म्य पर खुलकर बात की है। ऐसा नहीं है कि उनके पूर्व नाद पर बात नहीं हुई है, अनेकों संतों ने इस पर खुलकर बात की है। हाँ, इतना अवश्य है कि नानक ने नाद से इतर कुछ न माना, संपूर्ण जीवन का केंद्रविंदु वे नाद को मानते हैं। सारी आध्यात्मिक परंपराएँ नाद से निकलती हैं और उनका पर्यवसान भी नाद में होता है ऐसी उन्मुक्त एवं महत्त्वपूर्ण धारणा गुरु नानक जी के द्वारा ही प्रतिपुष्ट हुई। तभी तो वे कहते हैं--

एक ओंकार सतनामु करता पुरुखु
निरभउ निरवैरु।
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर
प्रसादि ।।

गुरु नानक देव जी मानते हैं कि परमात्मा अलख, अगम, अगोचर है उसका न कोई रूप है, न रंग है और न वर्ण, वह स्वयंभू है उसका होना स्वयं से है। जो साधक निर्विकार भाव से उसे स्मरण करता है वह उस परम प्यारे का हो जाता है--

अलख अपार अगम अगोचर ना तिसु
कालु न करमा।
जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु
भाउ न भरमा ।।
सचे सचिआर विटहु कुरबाणु।
ना तिसु रूप बरनु नहिं रेखिआ साचौ
सबदि नीसाणु ।।[1]

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिस ओंकार को गुरु नानक देव जी ने स्वयंभू या अयोनि माना उसे ही अन्यत्र ढलता हुआ वे देखते हैं। भक्ति में पगे उनके विचारों में कहीं भी अटपटापन या विरोधाभास नहीं है। उन्होंने माना कि सृष्टि के पूर्व यह अपूर्व स्वर ही था जो गूंजायमान था। इस्लाम में जिसे कुन कहा गया, सदाए आसमानी कहकर चिन्हित किया गया उसे ही गुरु नानक देव जी ओंकार कहते हैं और पूरे विश्व को उसकी झलमल रोशनी से रोशन मानते हैं। हजरत अली भी कुन की प्रशंसा में कहते हैं--

अहंगे आफसाही जहीन, मलंगे
होशरुकवा
अलफ जहीन बख्तारेमिसन
हुश्नेअफरोज कुन
अलादेजश्ने मिराजवख्लोत हुसैदे
आशिकी मालिद
मुहाबे आहिजा अख्लोत मिखन
बाबोश अकसुदा

गुरुनानक जी ने अन्यत्र संपूर्ण ब्रह्मांड को ओंकार से ही ज्योतित माना, उन्होंने माना कि हर तरफ ओंकार का ही रूप है, इसी प्रणव की किरण से सब रूपों को रूप मिला है--

जह जह देखा तह तह सोई[2]

ओंकारविषयक अवधारणा अमूर्त प्रत्ययमात्र नहीं है अपितु पूरे ब्रह्माण्ड का कारक रूप है। गुरु नानक देव जी की ईश्वर विषयक अवधारणा इसी नाद पर केंद्रित है जिसकी प्रशंसा में वे कहते हैं--

"कोटि ब्रहमांड को ठाकुर स्वामी सरब
जीआ का दातारे"[3]

गुरु नानक देव जी की मान्यता है कि वह प्रभु विविध रूप ग्रहण करता है। यह संसार उसी की माया है, वह सचखंड है जिसका कभी विनाश संभव नहीं है। पृथ्वी पर जन्म लेने वाली हर वास्तु नश्वर है जिसे मिट जाना है यकिंतु एक मात्र सचखंड है जिसका विनाश संभव नहीं है--

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु
पुरखु सुजाणु ।।
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै
सबदु नीसाणु ।।
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल
हैरानु ।।
तार घोर वाजिंत्र तह साचि तखति
सुलतानु ।।[4]

जिस स्वर को गुरुनानक देव जी ने परमात्मा की, उस रसूल की वानी माना उसे ही मौलाना रूम ने 'बाँगे आसमां' कहकर संबोधित किया। वे लिखते हैं कि--

बाँगे-अजब अज आसमाँ दर मी रसद
हर साअते,
मी नाशनवद आँ बाँगे-रा इल्ला किह
साहिब दौलते ।[5]

इस नाद रूप परमात्मा के विषय में संत रविदास कहते हैं कि यह परमात्मा कभी नहीं मिटता। यह अकथ है इसके रूप का बखान गिरा कभी नहीं कर सकती वह काल से परे है। उसे शीत और उष्ण का भय नहीं सताता और न ही यह परमात्मा शुभ एवं अशुभ के प्रभाव से प्रभावित होता है। जरा-मरण की पीड़ा से भी यह सदा ऊपर है ययही एक मात्र